उपनिषदों का सामान्य परिचय :-

'उपनिषद्' शब्द उप + नि उपसर्गपूर्वक 'सद्' धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर बनता है। 'सद्' धातु के तीन अर्थ लिये जाते हैं (1) विशरण अर्थात् नाश होना, (2) गति अर्थात् प्राप्त होना तथा (3) अवसादन अर्थात् शिथिल करना। इसके अतिरिक्त उप+नि+सद् का अर्थ बैठना भी होता है। इसका भाव है कि गुरु के समीप शिष्य का शिक्षा ग्रहणार्थ बैठना, अथवा ब्रह्म के समीप बैठना अर्थ लिया जाता है। ब्रह्म की प्राप्ति के जो साधन उपनिषदों में बतलाये गये हैं उन साधनों के अनुसार अपने जीवन का निर्माण कर उस परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति के निमित्त लोग प्रयत्न करते थे तथा उसकी प्राप्ति भी कर लेते थे। 'सद्' धातु के तीनों अर्थों में से यहाँ 'प्राप्त होना' अर्थ ही लिया जाना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। (उप) ब्रह्म की समीपता (नि) निश्चय करके जिससे (सद्) प्राप्त हो उसका नाम 'उपनिषद्' है। इस प्रकार ब्रह्मप्राप्ति के साधनभूत ग्रन्थ का नाम भी 'उपनिषद्' हुआ। इसकी हम इस तरह से कर सकते हैं- 'उप ब्रह्म-सामीप्यं नि निश्चयेन सीदति प्राप्नोति यया सा उपनिषद्' अर्थात् जिसके द्वारा ब्रह्म की समीपता प्राप्त हो उसको 'उपनिषद्' कहते हैं।

उपनिषदों की संख्या :-

उपनिषदों की संख्या 108 से लेकर 200 तक मानी जाती है। मुक्तिकोपनिषद् में उपनिषदों की संख्या 108 बतलाई गई है। किन्तु लोक में 11 उपनिषदें प्रमुख मानी जाती हैं। उनके नाम हैं— ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर। इन प्रामाणिक उपनिषदों पर ही शंकराचार्य ने अपना भाष्य लिखा है। ह्यूम ने जिन प्रमुख उपनिषदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया है उनमें 11 के अतिरिक्त कौषीतकि और मैत्री या मैत्रायणीय उपनिषदें हैं। मुक्तिकोपनिषद् में श्वेताश्वतर को छोड़कर शेष 10 को ही प्रमुख उपनिषदें माना है। दश उपनिषदों का नाम इसप्रकार है— ईशकेनकठप्रश्नमुण्डमाण्डूक्यतित्तिरिः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा॥
(मुक्तिकोपनिषद् 1-30)

उपनिषदों का वेदों के अनुसार वर्गीकरण :-

प्रत्येक उपनिषद् किसी न किसी वेद से सम्बद्ध है। प्रत्येक वेद से सम्बद्ध उपनिषदों की संख्या, उनके नाम एवं उनके शान्तिपाठ का विस्तृत वर्णन मुक्तिक उपनिषद् में प्राप्त होता है। इनकी संख्या 108 है। संक्षेप प्रत्येक वेद से संबद्ध उपनिषदें इस प्रकार है। (1) ऋग्वेदीय ऐतरेय, कौषीतकि आदि 10 उपनिषदें (2) शुक्लयजुर्वेदीय ईश, बृहदारण्यक आदि 19, (3) कृष्णयजुर्वेदीय - कठ,

तैत्तिरीय श्वेताश्वतर, कैवल्य आदि 32, (4) साम-वेदीय - केन, छान्दोग्य, मैत्रायणी आदि 16 (5) अथर्व-वेदीय - प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, महानारायण आदि 31 उपनिषदें।

उपनिषदों का विषयानुसार वर्गीकरण :-

108 उपनिषदों को विषयानुसार 6 भागों में बाँटा जा सकता है (1) वेदान्त के सिद्धान्तों पर निर्भर - 24, (2) योग के सिद्धान्तों पर निर्भर - 20, (3) सांख्य के सिद्धान्तों पर निर्भर - 17, (4) वैष्णव सिद्धान्तों पर निर्भर - 14, (5) शैव सिद्धान्तों पर निर्भर - 15, (6) शाक्त तथा अन्य सिद्धान्तों पर निर्भर - 18। विभिन्न विषयों पर इतनी संख्या में छोटी-बड़ी उपनिषदों के होने का यह कारण है कि सभी धर्मों और मतों के अनुयायियों का यह प्रयत्न रहा है कि उनके मन्तव्य का प्रतिनिधित्व करने वाली कोई न कोई उपनिषद् हो। इति।

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा।